कुरूक्षेत्रा दर्शन

भगत तुलसी राम पटियाले वाले धर्म प्रचार सैक्टरी

श्री कुरूक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति (रजि.)

एवं

गीता भवन ट्रस्ट, ब्रह्म सरोवर, कुरूक्षेत्र

की पुण्य स्मृति में उनके परिवार द्वारा
सूर्य ग्रहण के उत्सव पर 2019 में धर्मप्रचार हीत जारी की

Shri Kurukshetra Restoration Society (Regd.)
Geeta Bhawan Trust, Bram Sarowar, Kurukshetra
Email: geetabhawantrust@gmail.com | Ph.: 01744-270758

सव.श्रीमति शकुंतला देवी
सुपत्नी सव. श्री बनारसी दास
पटियाला

सव. भगत तुलसी राम
स्पुत्र सव. नथु राम
पटियाला

सव. श्रीमति इंदिरावति
सुपत्नी सव. तुलसी राम
पटियाला

प्रार्थना

हमने संयुक्त रूप से प्रयास करके अपने माता-पिता जी को श्रद्धांजलि अर्पण करने हेतू सूर्या ग्रहण के शुभ अवसर पर "श्री कुरूक्षेत्र दर्शन" के रूप में उनके द्वारा इस धर्म कुरूक्षेत्र की गई सेवाएँ, भक्ति को याद करते हुए भक्तजनों की सेवा में श्री कुरूक्षेत्र जीर्णोद्धार समिती द्वारा इस पवित्र तथा मोक्ष द्वार रूपी तीर्थ के जीर्णोद्धार के लिए किये कार्य, कुरूक्षेत्र की उत्पत्ति, विकास एवं महत्ता के बारे में इस पुस्तक द्वारा भक्तजनों को जानकारी देने का प्रयत्न किया है।

प्यारे भक्तजनो पवित्र स्थान कुरूक्षेत्र एवं: धर्मक्षेत्र में अपने माता-पिता के आर्शीवाद एवं: माँ सरस्वती की कृपा और कुरूक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति के सहयोग से सूर्य ग्रहण के शुभ अवसर पर समस्त भक्तजनों को प्रणाम करते हुए कुरूक्षेत्र तीर्थ की स्थापना तथा महत्ता के बारे में कुरूक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति, गीता भवन द्वारा उपलब्ध करवाएं गएं दस्तावेज़ो के आधार पर पूण जानकारी उपल्बध करवाने के लिये प्रयत्न किया है। यदि हम से इस पुस्तका में जाने अनजाने में कोई गलती या किसी व्यक्ति की भावनाओं को ठेस पहुँचता है, हम उसके लिये क्षामा याचक है हम यह भी आशा करते हैं कि भक्तजनों के ज्ञान में वृद्धि तथा मन को भगवान श्री कृष्ण के आर्शीवाद से गीता उपदेश को अपने जीवन में अपनाने का प्रयत्न करेंगे।

Mrs. & Mr. Brij Bhushan Gupta
Naveen Lehngas
Qila Chowk, Bazazan Bazar,
Patiala
98150-21282

Mrs. & Mr. B. R. Gupta
Joint Director,
Urban Governance Cell
Punjab, Patiala
98144 13196

गीता भवन ट्रस्ट

गीता भवन ट्रस्ट
एवं
श्री कुरूक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति (रजि.) 1921
ब्रह्म सरोवर तट–कुरूक्षेत्र

श्री इन्द्रजीत चोपड़ा
चेयरमैन (GBT)
093169-42742

श्री ओ.पी. गुप्ता
सैक्टरी (GBT)
094165-51089

श्री के.के. गुप्ता (ITO Retd.)
वाईस चेयरमैन (GBT)
098141-84856

श्री बृजभूषण गुप्ता
कोषाध्यक्ष (GBT)
098150-21282

THE HOLY CITY GUIDE MAP
KURUKSHETRA
Sri Krishan Museum
Panorama Science Centre
Sannehit Sarovar
6th Pathshahi Gurudwara
O P Jindal Park
Bhadra Kali Shaktipeeth
Sthaneshwar Mahadev Mandir
Harsh Ka Tila
Kansya Rath
Sheikh Chehli's Tomb
Dharohar (Haryana Museum)
Bhishm Kund (Narkatari)
Kalpana Chawla Planetorium
Jyotisar (Geetopdesh Sthali)
Jyotisar (Light & Sound Show)
Birla Mandir
Dropdi Koop
Shri Gulzari Lal Nanda Smarak
From Ambala
From Delhi
NH-1
TO UMRI
TO YAMUNA NAGAR
TO AMBALA
TO BHAGTHALA
TO PEHOWA
TO NARWANA
TO DHAND
TO KIRMICH
TO SALARPUR
NARKATARI ROAD
SECTOR 13
SECTOR 7-5
SECTOR 2
SECTOR 3
SECTOR 4-8
SECTOR 30
SUNDERPUR
KDB ROAD
CHAUTANG NALA
NIT KURUKSHETRA
BRAHM SAROVAR
JYOTISAR
Important Tourist Places
1 Brahm Sarovar
2 Sri Krishan Museum
3 Panorama Science Centre
4 Sannehit Sarovar
5 6th Pathshahi Gurudwara
6 O P Jindal Park
7 Bhadra Kali Shaktipeeth
8 Sthaneshwar Mahadev Mandir
9 Harsh Ka Tila
10 Sheikh Chehli's Tomb
11 Dharohar (Haryana Museum)
12 Bhishm Kund (Narkatari)
13 Kalpana Chawla Planetorium
14 Jyotisar (Geetopdesh Sthali)
15 Jyotisar (Light & Sound Show)
16 Birla Mandir
17 Dropdi Koop
18 Shri Gulzari Lal Nanda Smarak
Important MARKETS
1 OLD CITY MARKET
2 KESSEL MALL
3 CITY CENTRE, SEC-17
4 RLY ROAD MKT
5 SUBZI MANDI
TOURISM HOTELS
1 NEELKANTHI YATRI NIWAS 2 YATRIKA (JYOTISAR) 3 PARAKEET (NH-1 PIPLI)
ASHRAMS AT BRAHM SAROVAR
SHRI JAIRAM VIDYAPEETH, BRAHMPURI ASHRAM, GAURIA MATH, SHRI GITA DHAM, GITA BHAWAN
JAGANNATH MANDIR, KABIR KUTIR, BABA SHRAVAN NATH HAVELI, SHRI GAURAKH NATH MANDIR
BIRLA MANDIR, MANAVTAVADI MISSION, BALMIKI ASHRAM, HANSYOG ASHRAM,
BRAHMANAND ASHRAM, BABA KALI KAMLI PANCHAYATI KSHETRA

कुरूक्षेत्र में मुख्य दर्शनीय तीर्थ, मन्दिर, सरोवर तथा ऐतिहासिक स्थल

1. कुरूक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति की स्थापना और कार्य
2. गीता भवन ट्रस्ट की स्थापना एवं कार्य
3. कुरूक्षेत्र की उत्पत्ति एवं महिमा
4. कुरूक्षेत्र डेवलपमेंट बोर्ड
5. गीता उपदेश
6. कुरूक्षेत्र में सूर्यग्रहण काी महत्त्व
7. ब्रह्मसरोवर
8. सत्रिहित सरोवर
9. स्थानेश्वर महादेव मन्दिर
10. सप्त सरोवर तीर्थ
11. फल्गु तीर्थ
12. पेहवा तीर्थ
13. ज्योतिसर
14. बाण गंगा
15. भद्रकाली मन्दिर
16. बिरला मन्दिर
17. श्री वेंकटेश्वर स्वामी तिरूपति बाला जी मन्दिर
18. इस्कॉन मन्दिर
19. श्री कृष्ण संग्रहालय
20. कुरूक्षेत्र चित्रमाला तथा विज्ञान केन्द्र
21. कल्पना चावला सौरमंडल
22. जयराम विद्यापीठ आश्रम

गीता उपदेश

कुरुक्षेत्र में गीता उपदेश का वर्णन महाभारत में आता है कि पावन सरस्वती के तट पर ऋषिगण अपने आश्रमों में सहस्त्रों विज्ञानियों सहित निवास किया करते थे तथा ऋषि आश्रम ही धर्म तथा संस्कृति की शिक्षा के सर्वोत्तम साधन थे। युद्ध की इच्छा से कौरवों और पांडवो की सेनायें क्रमशः पूर्व एवं पश्चिम की ओर से इस समरांगण में प्रविष्ट हुई तथा उन में 18 दिनों तक भीषण संग्राम होता रहा। इसी ग्रन्थ के भीष्म पर्व से प्रमाणित होता है, युद्ध के प्रथम दिवस को जब पांडवों के वीर सेनानी महारथी अर्जुन ने अपने ही भाई बान्धवों को दोनों पक्षों की ओर से युद्ध के लिये तैयार देखा, तब युद्ध में कुल संहार के भयंकर परिणाम को सोच कर वे कर्त्तव्य विमुख हो गये तथा उन्होंने युद्ध करने से इन्कार कर दिया।

उस समय अर्जुन के सारथी बने हुये भगवान श्री कृष्ण ने वेदों तथा शास्त्रों के सार भूत **श्री मद्भगवद् गीता रूपी अमृत का पान कराके कठोर** कर्त्तव्य पालन की प्रेरणा दी भगवान श्री कृष्ण ने समरांगण के जिस पवित्र स्थान पर गीता का वह उपदेश दिया वह पुण्य स्थान (ज्योतिसर) के नाम से विख्यात हुआ।

What Gita Says about Life

Life is a Challange	Meet it	Life is a Song	Sing it
Life is Gift	Accept it	Life is an Opportunity	Avail it
Life is an Adventure	Dare it	Life is a Journey	Complete it
Life is a Sorrow	Overcome it	Life is a Promise	Fulfill it
Life is a Tragedy	Face it	Life is a Love	Enjoy it
Life is a Duty	Perform it	Life is a Beauty	Praise it
Life is a Game	Play it	Life is a Spirit	Realise it
Life is a Mystery	Unfold it	Life is a Struggle	Fight it

गीता यंती उत्सव 2019 की मुख्य झांकीयां

भारतीय प्रधान मंत्री श्रीमती इन्द्रगांधी के सरोवर पर पधारे

भारत के ग्रहमंत्री के गीताभवन प्रधारने पर सवागत समारोह

स्थापना

कुरूक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति (रजि.)

भारतवर्ष के हिन्दू महाराजाओं, राजाओं, धर्म गुरूओं तथा धनडियाँ व्यक्तियों से सनातन धर्म के प्रचार तथा तीर्थों के जीर्णोद्धार और विकास के लिए श्री भारत धर्म महामण्डल का गठन महाराजा दरभङ्गा की अध्यक्षता में मोक्ष नगरी काशी (वारणासी) में हुआ। श्री भारत धर्म महामण्डल का वर्ष 1918 में दिल्ली कॉन्फ्रेंस में भारत वर्ष के 100 से अधिक महाराजाओं, राजाओं, धर्म गुरूओं और धनाडियाँ व्यक्तियों ने भाग लिया।

श्री भारत धर्म महामण्डल के अधिवेश्न में दिल्ली पधारे हुए लगभग सभी सदस्यों ने कुरूक्षेत्र धर्मक्षेत्र के ब्रह्म कुड़ में स्नान करने के लिए 8 जून 1918 में सूर्य ग्रहण के महापर्व के उत्सव में पधारे। इस अवसर पर महाराज पटियाला आये अपने साथ पटियाला स्टेट के बाबू दियाली राम चौपड़ा डी. पी. आई पटियाला के साथ पंधारे महामण्डल के पंधारे हुए सदस्यों के द्वारा कुरूक्षेत्र की दयनीय दशा को देखकर हिन्दू धर्म के इस महान तीर्थ के जीर्णोद्धार के लिए कुरूक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति का गठन किया। इस अवसर पर महाराज पटियाला द्वारा तीर्थ के जीर्णोद्धार के लिए एवं अन्य महाराजाओं राजाओं तथा धनी व्यक्तियों के साथ–साथ 20,000 रूपये की राशी दान के रूप में दिये। सभा के संचालन के लिए गठित की गई सभा में महाराजा दिलीप सिंह सलाणा राज्ये के अध्यक्ष तथा राय बहादुर सेठ मिन्नामल दिल्ली वालों को उपाध्यक्ष तथा पटियाला स्टेट के डी.पी. आई. बाबू दयाली राम चौपड़ा जी को कुरूक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति के जनरल सैक्टरी के पद पर नियुक्त किया गया।

कुरूक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति के संरक्षक

महाराजा पटियाला, महाराजा कश्मीर, महाराजा रीवा, महाराजा बांसवाड़ा, महाराजा सलाणा, महाराजा दरभंगा, महाराजा सिरमौर, महाराजा जील, महाराजा टिहरी गढ़वाल, महाराजा अलबर, महाराजा कल्लसियाँ तथा महाराजा लढोरा को चुना गया।

कुरूक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति के 100 वर्ष के कार्यकाल में मुख्य रूप से सभासद

चेयरमैन	वाइस चेयरमैन	सैक्टरी
1 महाराज दिलीप सिंह	1 राय बहादुर, वनारसी दास	1 दयाली राम चोपड़ा
2 जस्टिस जी. एल .चोपड़ा	2 श्री ओमकारनाथ तिवाड़ी	2 श्री कंदारनाथ चोपड़ा
3 जस्टिस जी. एल .चोपड़ा	3 भगत तुलसी राम	3 श्री कुलवंत राय
4 जस्टिस जी. एल .चोपड़ा	4 भगत तुलसी राम	4 श्री ज्ञानचन्द बिज्ज
5 जस्टिस जी. एल .चोपड़ा	5 भगत तुलसी राम	5 श्री निरंजन दास महाजन
6 जस्टिस जी. एल .चोपड़ा	6 श्री राजकुमार गुप्ता	6 श्री देवीदास शर्मा
7 जस्टिस जी. एल .चोपड़ा	7 श्री राजकुमार गुप्ता	7 श्री वृजलाल टंडन
8 जस्टिस जी. एल .चोपड़ा	8 श्री राजकुमार गुप्ता	8 श्री जीवन लाल जैन
9 श्री इन्द्रजीत चोपड़ा	9 श्री के.के. गुप्ता	9 श्री एस पी. खेतरपाल

समिति का कुरूक्षेत्र जीर्णोद्धार में सौ वर्षीय मुख्य रूप में योगदान

1 समिति का गठन

2 श्रीकृष्ण मन्दिर की स्थापना।

3 ब्रह्म सरोवर की खुदाई।

4 सरस्वती नदी की खुदाई।

5 सूर्य कुण्ड का जीर्णाद्धार।

6 प्ररिक्रमा के 48 कोस के चित्र निर्माण।

7 भीष्म कुण्ड की मरम्मत।

8 बाण गंगा की खुदाई।

9 भद्रकाली मन्दिर की मरम्मत।

10 ब्रह्म सरोवर तथा स्नेत सरोवर तक जल पहुँचाने ।

11 भारत सरकार द्वारा समिति के अनुरोध पर रेलवे यात्रा टैक्स लगाना।

12 समिति द्वारा सूर्य ग्रहण पर कुरूक्षेत्र दर्पण पत्रिका जारी किया गया।

13 राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की अस्थियाँ प्रभाव समय सहयोग देना।

14 संस्कृत के विकास तथा गीता उपदेश के लिए भारत सरकार से अनुरोध करके कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी स्थापना करवाना।

15 भारत राष्ट्रपति डा. रजिन्द्रर प्रसाद जी के कुरूक्षेत्र आगमन पर कुरूक्षेत्र के जीर्णोद्धार के लिए प्रार्थना पत्र देना।

16 भारत की प्रधान मंत्री श्रीमती इन्द्रागाँधी जी के कुरूक्षेत्र आगमन पर ब्रह्मसरोवर के निर्माण हेतु प्रार्थना पत्र देना।

17 भारत रत्न स्वर्गीय श्री गुलजारीलाल नंदा जी से कुरूक्षेत्र विकास बोर्ड की स्थापना के लिए अनुरोध।

18 भारत के सूचना एवं प्रसारण मंत्री जी श्री एन. वी. गैडगील जी से कुरूक्षेत्र में अकाशवाणी केन्द्र स्थापित करवाकर गीता उपदेश का सीधा प्रसारण करवाने के लिए प्रार्थना करना।

19 भारत सरकार का कुरूक्षेत्र डेवलपमेंट बोर्ड की स्थापना में सहयोग।

20 कुरूक्षेत्र को जिला स्तर प्रदान करने के लिए राज्य सरकार को प्रार्थना ।

21 गीता भवन हाल में देवी–देवताओं की मूर्तियाँ स्थापत कर मन्दिर बनवाना।

22 गीता भवन में श्री सूर्य मन्दिर का निर्माण।

23 गीता भवन का जीर्णोद्धार।

24 गीता भवन में लंगर भवन का निर्माण।

25 गीता भवन में चार नये ब्लाकों में चालीस कमरों का निर्मान।

26 गीता भवन में साधु–सन्तों के लिए प्रतिदिन भंडारा चलाना।

27 गीता भवन में जन्म–अष्टमी पर प्रतिवर्ष उत्सव।

28 गीता भवन में महाशिवरात्रि पर प्रतिवर्ष उत्सव।

29 गीता भवन में दुर्गा अष्टमी उत्सव प्रतिवर्ष।

30 गीता भवन में गीता जयंती उत्सव प्रतिवर्ष।

31 गीता भवन में श्रीमद्भागवत पुराण कथा।

32 गीता भवन में सूर्य ग्रहण तथा सोमवती अमावस्य उत्सव पर यात्रियों को AC/NonAC कमरों में ठहरानें और भोजन का प्रबन्ध तथा सत्संग/कीर्तन का आयोजन किया जाता है।

गीता भवन ट्रस्ट की स्थापना

महाराजा रीवा द्वारा कुरूक्षेत्र ब्रह्म सरोवर में सूर्य ग्रहण के समय वर्ष 1918 में श्री कृष्ण भगवान से मांगी गयी मत्रत (पुत्र उत्पत्रि) पूर्ती के उपलक्ष में वर्ष 1921 में श्री गीता भवन का निर्माण हस्तलिखित सनातन धर्म की धार्मिक पुस्तकों के संग्रहालय गीता उपदेश के प्रचार के लिए करवाया गया। जिस का उद्घघाटन उस समय से पंजाब राज्य के महामहिम राज्यपाल जी द्वारा किया गया। यात्रियों के निवास के लिए गीता भवन के साथ एक छोटी सी धर्मशाला का भी निर्माण करवाया गया। भारत सरकार द्वारा संस्कृत के विकास तथा गीता उपदेश के प्रचार के उद्धेश्य से कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय की प्रार्थना पर गीता भवन की समस्त धार्मिक पुस्तकों को गीता भवन ट्रस्ट द्वारा विश्वविद्यालय को दान के रूप में अर्पण किया गया और श्री गीता भवन हाल में महाराजा रीवा द्वारा दो लाख रु. के दान से श्री राधा–कृष्ण, श्री दुर्गा जी, श्री हनुमान जी, श्री शिव परिवार की स्थापना महारानी कृर्ती कुमारी रीवा के सहयोग से करकर गीता भवन हाल को विशाल मन्दिर का रूप दिया गया। भगवान सूर्य का एक विशाल मन्दिर का निर्माण वर्ष 2016 में किया गया।

गीता भवन के सौ वर्ष मुख्य रूप से सभासद

Chairman	**Vice Chairman**	**Secretary**
Maharaja Reva	L. Sadhu Ram	Sh. Diali Ram
Justice G.L. Chopra	Sh. Omkar Tiwari	Sh.Bhagat Tulsi Ram
Justice Amarjit Chopra	Sh. Raj Kumar Gupta	Sh. K.K. Gupta
Inds Inderjit Chopra	Sh. K.K Gupta	Sh.S.P. Kheatarpal

धर्मशाला

महाराजा रीवा द्वारा निर्मित की गयी छोटी धर्मशाला का निर्माण 1921 में यात्रियों के लिए किया गया। कुरूक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति के सहयोग से 30 कमरों का पूर्ण निर्माण किया गया और 90 नये कमरों का निर्माण कर कुल 120 AC/NonAC कमरे इस समय गीता भवन प्रांगण में आधुनिक सभी सुविधायें यात्रियों के लिए उपल्बन्ध है।

भंडारा

गीता भवन प्रांगण में पिछले लगभग 50 वर्षों से प्रतिदिन 150 संतों तथा साधुओं और भक्तों के लिए भंडारे की व्यवस्था उपलब्ध है। भण्डारे के लिए अति सुन्दर विशाल भण्डारा भवन भी गीता भवन ट्रस्ट तथा कुरूक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति द्वारा धर्म प्रेमियों के अुनदान एवं सहयोग से बनाया जाता है।

धार्मिक उत्सव

गीता भवन प्रांगण में प्रतिवर्ष गीता जयन्ती, जन्म अष्टमी शिवरात्री, श्री दुर्गा पूजा, आदि उत्सवों से साथ–साथ श्रीमद्भगवत, गीता शिव पुराण, रामायण, आदि के आयोजन तथा सोमवती अमावस और सूर्य ग्रहण के पर्व समय यात्रियों को ठहरने, भोजन, विश्राम और सत्संग, पूजा–हवन–यज्ञ आदि करने के लिए भी विशेष प्रबन्ध किया जाता है।

अन्धविद्यालय

गीता भवन प्रांगण में गीता भवन ट्रस्ट द्वारा संम्वत् 1921 में छोटी धर्मशाला में अन्धविद्यालय की स्थापना की गई। यहां पर विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए ठहरने, भोजन, वस्त्र तथा औषधि इत्यादि का विशेष प्रबन्ध किया जाता है।

कुरूक्षेत्र विकास बोर्ड द्वारा पूर्ण निर्माण और सुंदरता के लिए किए मुख्य विकास कार्य

1 ब्रह्म सरोवर का 2.75 करोड़ से पूर्ण निर्माण।

2 नहरी पानी को ब्रह्म सरोवर तक पहुँचाना।

3 ब्रह्म सरोवर के पश्चिमी हिस्से का 13 करोड़ रु. से निर्माण।

4 ब्रह्म सरोवर के घाटों पर 20 स्त्री स्नान घर बनाना।

5 गीता उपदेश के लिए 2 करोड़ की लागत से विशाल चबुतरों का निर्माण।

6 स्नेत सरोवर का 2 करोड़ की लागत से पूर्ण निर्माण।

7 ज्योतिसर सरोवर का 50 लाख की लागत से पूर्ण निर्माण।

8 ज्योतिसर तीर्थ पर 1.5 करोड़ की लागत से मनोरंजन के लिए Light and Sound लगाना।

9 सरस्वती तीर्थ का एक करोड़ की लागत से पूर्ण निर्माण।

10 45 लाख के खर्चे से 7 एकड़ भूमि ग्रहण करना।

11 प्राची तीर्थ से सरस्वती तीर्थ तक 1 करोड़ खर्चे से जल पहुँचाना।

12 सरस्वती दीवार का 1.48 करोड़ के खर्च से निर्माण।

13 भीष्म कुण्ड, बाण गंगा, शालीहोतरा, बिंदुसार, पांड पिंड़रा, सर्पदमन, कपिल मुनि, ऋण मोचन, लकोदर आदि तीर्थों का 6.00 करोड़ की लागत से पूर्ण निर्माण।

14 बिद कियार लेक का 2.50 करोड़ की लागत से विकास कार्य।

15 लव–कुश, काया, शोदन, पुष्कार, ब्रह्म महेश्वर, कुलोतरान, सीतामयी, दशाश्वमेध, पुंड़री निरकार आदि तीर्थों का 9.84 करोड़ की लागत से विकास।

16 भिन्न–भिन्न तीर्थों पर मेले के लिए 200 एकड़ जमीन अधिकृत की।

17 ब्रह्म सरोवर के उत्तरी कोने पर विशाल धर्मशालाओं का प्रबंध।

18 शहीद मदन लाल डींगरा समारक समिति को धर्मशाला निर्माण के लिए 3 एकड़ भूमि अनुदान में देना।

19 श्री कृष्णा म्यूज़ीयम का 4 करोड़ की लागत से निर्माण।

20 मल्टीमीडिया महाभारत तथा गीता गैलरी ऑफ श्री कृष्ण म्यूज़ीयम की 3 मंजली इमारत का निर्माण।

21 पैनोरमा तथा सांइस सेंटर का 9.70 करोड़ से निर्माण।

22 गीता जंयती समारोह का योजन।

23 रियाना कला परिषद को बोर्ड द्वारा ब्रह्म सरोवर के पूवी दिशा में आर्ट के लिए 6 एकड़ स्थान देना।

24 श्री ब्रह्मपुरी अनकक्षेत्रा आश्रम ट्रस्ट को 18 मंजिला अष्टा विभूति मंदिर निर्माण के लिए 3 एकड़ स्थान देना।

25 ज्योतिसर में इस्कॉन मंदिर के लिए 6 एकड़ ज़मीन देना।

26 श्री वेंकटेश्वर (बाला जी) के मंदिर के लिए 5.5 एकड़ ज़मीन देना।

27 हरियाणा टूरिज्म विभाग को 2 एकड़ स्थान यात्री निवास के लिए देना।

28 भारत रत्न स्वर्गीय श्री गुलजारी लाल नंदा जी की याद में 1.51 करोड़ की लागत से बनाना।

29 पिप्पली में 25 लाख रु. की लागत से गीता द्वार बनाना।

30 स्नेत सरोवर पर 12 लाख की लागत से सूर्य द्वार बनाना।

31 स्नेत सरोवर के लिए 1.26 करोड़ की लागत से बरसाती पानी की समस्या को सुलझाना।

32 कुरूक्षेत्र के चारों कोनों पर यक्ष के बुत लगवाना।

कुरूक्षेत्र की उत्पत्ति

वामन पुराण के 22वें अध्याय के अनुसारः— महाराजा कुरु ने पावन सरस्वसती के किनारे इस स्थान पर आध्यात्मिक शिक्षा तथा अष्टाङ्ग धर्म की कृषि करने का निश्चय किया। राजा यहाँ स्वर्ण रथ पर बैठकर आये तथा उस रथ के स्वर्ण से कृषि के लिए हल तैयार किया। उन्होंने भगवान् शिव तथा यमराज से क्रमशः वृषभ (बैल) तथा महिष (भैंसा) लेकर खेती आरम्भ की उस समय देवराज इन्द्र ने आकर राजा कुरु से प्रश्न किया, हे राजन! क्या करते हो? उन्होंने निवेदन किया 'मैं अष्टाङ्गधर्म की कृषि के लिये भूमि तैयार कर रहा हूँ'।

इन्द्र ने पुनः कहा 'महाराज बीज कहाँ हैं। राजा कुरु ने निवेदन किया' देवेन्द्र बीज मेरे पास हैं देवराज इन्द्र हँसने लगे तथा अपने स्थान को लौट गये तथा राजा निरन्तर सात कोस भूमि कृषि के लिये प्रतिदिन तैयार करते रहे जब उन्होंने 48 कोस भूमि तैयार कर ली, भगवान विष्णु उन के पास पधारे उन्होंने भी राजा कुरु से प्रश्न किया कि राजन! क्या कर रहे हो? उन्होंने इन्द्र के प्रश्न करने पर जो उत्तर दिया था वहीं इन को भी निवेदन किया, भगवान् विष्णु ने कहा! बीज मुझे दे दें राजन मैं उसे आप के लिए बो दूँगा। इतना सुन कर राजा कुरु ने यह कहते हुए कि बीज मेरे पास है, अपनी दाहिनी भुजा फैला दी भगवान् विष्णु ने अपने चक्र से उसके सहस्त्र टुकड़े कर दिए और उन टुकड़ों को कृषि भूमि में बो दिया। भगवान विष्णु ने राजा से प्रसन्न होकर उनसे वर मांगने को कहा।

राजा ने निवेदन किया कि यह सब ''पुण्य क्षेत्र धर्म क्षेत्र'' होकर मेरे नाम से विख्यात हो। भगवान् शिव देवताओं सहित यहाँ वास करें तथा यहाँ पर किया हुआ स्नान, उपवास, तप, यज्ञ, शुभ कर्म वह अक्षय हो जाये और जो यहाँ मृत्यु को प्राप्त हो वह अपने पाप–पुण्य के प्रभाव से रहित होकर स्वर्ग को प्राप्त हो भगवान् ने 'तथाऽस्तु' कह कर राजा के वचनों को स्वीकार किया।

प्राचीन कुरूक्षेत्र

प्राचीन कुरुक्षेत्र में एक पवित्र सरोवर था न केवल शहर बल्कि एक विस्तृत भू–क्षेत्र था, जिस में बहुत से शहर तथा गांव आबाद थे। यह लगभग 20 मील लम्बा तथा इतना ही चौड़ा था, यह दक्षिण में वर्तमान पानीपत तथा जीन्द तक पश्चिम में वर्तमान पटियाला तक पूर्व में यमुना तथा उत्तर में सरस्वती तक फैला हुआ था।

कुरुक्षेत्र के इस पावन भू–क्षेत्र में सरस्वती के पवित्र तटों पर ऋषियों ने सर्व प्रथम वेद मन्त्रों का उच्चारण किया, ब्रह्मा तथा अन्य देवताओं ने यज्ञों का आयोजन किया, महर्षि वसिष्ठ तथा विश्वामित्र ने ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त किया, पांडवों तथा कौरवों ने इसी को महाभारत समर का युद्धाग्न, यहीं पर भगवान श्रीकृष्ण जी ने श्रीमद्भगवत गीता का सुन्दर उपदेश दिया, तथा महर्षि वेद व्यास जी ने इसी से सम्बन्धित महाभारत के प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की, महाराजा कुरु ने इसी को कृषि क्षेत्र बनाया और पुराणों ने इसका विस्तार पूर्वक वर्णन किया।

इसी प्रसिद्ध और पावन क्षेत्र में समृद्धिशाली हिन्दु सम्राटों को राज्य लक्ष्मी से वंचित किया गया मुसलमान बादशाहों के विशाल साम्राज्य मिट्टी में मिला दिये गये। मराठों की सुदृढ़ शक्तियों का यहीं पर पतन हुआ, प्रत्येक युग में महाराजों तथा साम्राज्यों के उत्थान तथा पतन का इतिहास इसी क्षेत्र में मानव रक्त से लिखा गया।

यजुर्वेद ने इसे इन्द्र, वरुण, विष्णु, शिव तथा अनन्य देवताओं की यज्ञ भूमि बताकर वर्णन किया है। महाराजा कुरु के यहाँ आने से पूर्व यह ब्रह्मा की उत्तर वेदी के नाम से विख्यात था। इसका सुविस्तृत वर्णन वामन पुराण में मिलता है।

ब्रह्म पुरान के अनुसार

घमण्डी राजा बलि की राजधानी भी कुरूक्षेत्र की 48 कोस भूमि में थी। राजा बलि के घमण्ड को नष्ट करने के उद्देश्य से भगवान विष्णु ने एक ब्राह्मण रूप में राजा बलि के समक्ष प्रगट होकर तीन पग भूमि का दान मांगा। राजा बलि द्वारा भूमिदान के बाद भगवान नारायण ने पहले पग पर बलि के समस्त राज्य की भूमि, दूसरे पग में समस्त सृष्टि को मापा फिर राजा बलि से प्रश्न किया की तीसरा पग कैसे मापूं इस पर राजा बलि ने अहंकार में भगवान नारायण को तीसरा पग अपने सिर पर रखने को कहा जैसे ही भगवान ने पाव से राजा बलि के सिर र्स्पश किया और राजा बलि इस ब्रह्म सरोवर द्वारा पाताल लोक जाने लगा तो राजा का सारा घमण्ड चूर–चूर हो गया और भगवान को पहचानते हुये उनके चरणों में गिर गया ।

युधिष्ठिर के शब्दों में

यदि व्यक्ति मन से भी कुरुक्षेत्र की ओर जाने की इच्छा मात्र करता है तो भी उसके पाप नष्ट हो जाते हैं और वह ब्रह्म लोक को प्राप्त होता हैं। कुरुकुल श्रेष्ठ! जो श्रद्धा पूवक कुरुक्षेत्र तीर्थ की यात्रा करता है उसे राजसूय तथा अश्वमेध, इन दोनों यज्ञों का एकत्र फल प्राप्त होता है।

आधुनिक युग का ऐतिहास

प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि महा–भारत के युद्ध से लेकर महराजा हर्ष वर्धन पर्यन्त यह क्षेत्र सांस्कृतिक तथा समाजिक दोनों ही दृष्टिकोणों से उन्नति के पथ पर था सन् 300 ई०पू० में यूनानी राजदूत मेगस्थनीज ने लिखा है कि लोग रात में घरों के दरवाजे खोल

कर सोते है, चोरी तथा बदमाशों का नाम भी नहीं हैं, स्त्रियों का चरित्र उच्च कोटि का है, देश में चारों ओर शान्ति है, आर्थिक दशा अच्छी है, व्यापार तथा उन्नति में राज्य प्रबन्ध की सहायता प्राप्त होती है, लोगों का चरित्र उच्च कोटि का है। बौद्धों के समय में भी कुरुक्षेत्र आर्य संस्कृति (वैदिक संस्कृति) का सर्वोत्तम केन्द्र रहा है। हिन्दु एवं बौद्ध परस्पर मित्रता भाव से रहते थे, राजा बौद्ध हो या हिन्दू का हमारे देश के इतिहास की प्रमुख घटनाओं से घनिष्ठ संबन्ध है, थानेसर पानीपत तरावड़ी कंथल तथा करनाल इत्यादि इतिहास प्रसिद्ध युद्ध मैदान कुरुक्षेत्र की इस पुण्य भूमि में ही स्थित है 326 ईसा पूर्व से लेकर 480 ईसा के बाद प्रथम तो यह क्षेत्र मौर्य राजाओं में रहा तत्पश्चात् गुप्त राजाओं का भी अधिकार हुआ जिनका राज्य काल भारतीय इतिहास में (स्वर्ण युग) कहा जाता है। गुप्त राजाओं के राज्य काल में यह क्षेत्र उन्नति के शिखर पर था।

उस समय भी थानेसर ऐश्वर्यशौली तथा वैदिक साहित्य की शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र माना जाता था।

महाराजा हर्ष के दरबारी प्रसिद्ध कवि बाण भट्ट ने अपने ग्रन्थ हर्षचरित में इस क्षेत्र के ऐश्वर्य का विस्तार से वर्णन किया है, उसने लिखा है कि थानेसर सरस्वती नदी के तट पर बसा हुआ तथा धार्मिक शिक्षा तथा व्यापार का प्रसिद्ध केन्द्र हैं। वहाँ का तमाम वायु मंडल वेद मन्त्रों की ध्वनियों से परिपूर्ण है। महाराजा हर्ष के समय चीनी यात्री ह्यूनसांग भारत भ्रमण के लिये आया था वह सन् 621 से सन् 645 तक भारत में रहा। उसके उपलब्ध लेखों से तत्कालीन भारत की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है। वर्तमान शताब्दी धार्मिक प्रगति का युग है, वैदिक धर्म पुनः उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है, निस्सन्देह ही धार्मिक परम्परा ने थानेसर को उत्तरी भारत में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने में अत्यधिक सहायता

प्रदान की है:—

इसके बाद कुरुक्षेत्र का इतिहास तो बर्बर आक्रमणों एवं पैशाचिक विनाश का इतिहास है यह पवित्र भूमि बार—बार रक्त स्नात हुई और बार—बार इस के पवित्र स्थलों पर आततायी आक्रमणकारियों द्वारा हमले किये गये।

पवित्र सात नदियां:— 1. सरस्वती 2. वैतरणी 3. आपगा 4. मधुस्त्रवा 4. कौशिकी 6. दृषद्वती 7. हिरण्यवती।

पवित्र नदियां:—उनके प्रवाह बन्द हो चुके हैं। बरसात के मौसम में थानेसर, ज्योतिसर तथा पेहवा आदि स्थानों में बहती है।

पवित्र सरोवर:— 1. ब्रह्म सरोरव 2. ज्योतिसर 3. स्थानेश्वर 4. देवीकूप।

पवित्र कूप:—1. चन्द्रकूप 2. विष्णुकूप 3. रुद्रकुप 4. देवीकूप।

प्राचीन कुरुक्षेत्र में 360 तीर्थों तथा की संख्या मानी गयी है सातों वनों का अब कोई विशेष अवशेष नहीं रहा—वनों को काट कर अब प्रायः खेतों का रूप दिया जा चूका है वनों के नामों से वहाँ गाँव बसे हुऐ हैं।

काम्यक वन:— कमोधा गाँव ज्योतिसर से 3 मील दूर पेहेवा में है।

अदिति वन:— अमीन ग्राम जो कुरुक्षेत्र से 5 मील दूर दिल्ली सड़क पर हैं

व्यास वन:— बारषा ग्राम जो करनाल कैथल सड़क पर हैं

फलकी वन:— प्रसिद्ध फल्गू तीर्थ में कुरुक्षेत्र से 16 मील दूरी पर है

सूर्यवन:— सूर्य कुण्ड तीर्थ के संजूमा ग्राम में हैं

मधुवन:— करनाल के मोहिना ग्राम में हैं

शीत वन:— शीत वन सीवन ग्राम (कैथल) तहसील में है।

कुरुक्षेत्र की महिमा

उपनिषदों, पुराणों, प्राचीन ग्रन्थों और धर्म शास्त्रों में जगह जगह वर्णन है। यह तीर्थ सब से प्रसिद्ध प्राचीन और राज तीर्थ कहा गया है। इसका जल, थल और आकाश तक पवित्र माना जाता है। इस की 48 कोस भूमि धर्म–कर्म का प्रसिद्ध फल देने वाली बल्कि मुक्ति की दाता है। कोई ऋषि मुनि का अवतार ऐसा नहीं हुआ जिस ने यहाँ जप तप और यज्ञ करके इस की पवित्रता का सबूत न दिया हो। ऐतिहासिक दृष्टि से यह भूमि सृष्टि की उत्पत्ति का केन्द्र है। दुनिया के अन्य धर्मों की दृष्टि में इस भूमि की बड़ाई महाभारत की वजह से है परन्तु हिन्दुओं की नज़र में यहाँ महाभारत की बड़ाई इस वजह से है कि महाभारत जैसा ऐतिहासिक युद्ध इस पवित्र भूमि पर घटित हुआ।

सत युग में ब्रह्मसर रहा, त्रेता में जब क्षत्रियों के राज्य से परशुराम ने पांच तलाब भरे तब रामह्रद नाम हुआ, द्वापर में कुरु राजा के मोक्ष प्राप्ति हेतु हल चलाने और शरीर काट कर बोने से कुरुक्षेत्र नाम हुआ और कलियुग में समन्त यानि पांच प्रसिद्ध तीर्थ (1) सन्निहित (2) स्थानेश्वर (3) रुद्रकूप (4) चतुर्मुख (5) कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध हुआ। यह चारों युगों का तीर्थ है। इस भूमि पर पाप नहीं करना चाहिये। राजा जनक ने ऋषियों की आज्ञा अनुसार सुनहरी हल बना कर चलाया था और पृथ्वी से सीता जी को प्राप्त किया था। भगवान श्री कृष्ण का नाम इस के चप्पे–चप्पे से जुड़ा हुआ है। महाभारत की लड़ाई में तो वह इस भूमि में घूमते रहे। एक बार सूर्य ग्रहण के अवसर पर भी वह यादवों के साथ यहाँ पधारे और वासुदेव जी ने बड़ा भारी यज्ञ किया था। गोकुल से राधिका जी और ग्वाल बाल

इस अवसर पर आये थे। स्थानेश्वर ऐतिहासिक स्थान में शेख चीली का रोज एक मशहूर स्थान देखने योग्य है। जो बहुत उच्चा है और जो दूर से दिखाई देता है। यह शाहजहां ने अपने पीर की स्मृति में बनाया था। इस समय में धार्मिक पुरुष इस स्थान को धर्म क्षेत्र समझ कर यहाँ पधार कर पुस्तकें लिखते रहे हैं। भाई गुलाब सिंह जी, निर्मला साधु ने यहाँ पर अध्यात्मक राम राज्य चन्द्र प्रबोध इत्यादि ग्रन्थ यहाँ पर रह कर लिखे है। भाई सन्तोष सिंह जी ने सूजं प्रकाश प्रसिद्ध ग्रन्थ भी इसी में लिखा।

चक्रव्यूहः— यह स्थान अमीन ग्राम जिला करनाल में है। चक्रव्यूह का नक्शा यदी कांसी की थाली में लाल चन्दन से, अनार की कलम से मन्त्र लिख कर प्रसव समय जल में घोल कर जननी को पिला दिया जाऐ तो बच्चे का जन्म शीघ्र हो जाऐगा।

शास्त्रों में निम्नलिखित सेवाएं को भी तीर्थ करने के समान माना गया है

मातापिता तीर्थः— पुत्र जो घर पर ही अपने माता पिता की सेवा करता है उसे घर पर ही भागीरथी स्नान का पुण्य मिल जाता है।

गुरू तीर्थः— सूर्य दिन के, चन्द्रमा रात्रि के तथा दीपक अन्धकार को हटा कर उस में उजाला करते हैं, परन्तु गुरू तो शिष्य के अज्ञान अन्धकार को हटा कर उस के दिन रात और घर में उजाला करते हैं।

भार्या तीर्थः— पुरुषों को सद्गति देने वाला कोई दूसरा तीर्थ नहीं है

पति तीर्थः— स्त्री के लिये पति ही परमेश्वर होता है।

वायु पुराणः— मनुष्य जन्म का परम उद्देश्य और एक मात्र लक्ष्य है भगवद् प्राप्ति कर भगवान की शरण में जाना तथा भगवान के कीर्तन, श्रवण, वन्दन और पूजन में मन लगाना ये सारा संसार नाशवान है तथा दुख देने वाला है परन्तु भगवान जरा—मृत्यु से परे भक्ति देवी के प्राण वल्लभ तथा अच्युत हैं, यह विचार कर भगवान का भजन करना चाहिये। उने भगवान का ज्ञान होता है पाप रहित साधु से, उन साधुओं के संग से जिन की कृपा से मनुष्य दुःख से छूट जाता है। साधु वे नहीं जो केवल नामधारी हों वस्तुतः साधु वे हैं जिनकी लोक परलोक के विषयों में आसक्ति ना रह गई हो, जो काम—लोभ से रहित हो, ऐसे साधु भगवान के भजन में लगे हुए मिलते हैं। तीर्थों में उनके दर्शन मनुष्यों की पाप राशि जला डालने के लिए अग्नि का काम करते हैं, इस लिये पवित्र जल वाले तीर्थों में, जो सदा साधु महात्माओं से सुशोभित रहते हैं, हमें जाना चाहिए।

घर में रहते हुए किस प्रकार तीर्थ न जाने का फल मिलता है। उसका यह अभिप्राय नहीं है कि तीर्थ पर जाना आवश्यक नहीं है अपितु मातृ पितृ गुरू सेवा इत्यादि का विवेचन किया है ।

अष्टाङ्ग धर्म

जप, सत्य, क्षमा, दया, शौच, दान, योग तथा ब्रह्मचर्य,

कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण का महत्व

प्राचीन समय से सूर्यग्रहण पर देश के कोने–कोने से साधु–महात्मा, मठाधीश, सामाजिक कार्यकर्त्ता, राजनीतिज्ञ, धार्मिक नेता, बच्चे, जवान, बूढ़े, स्त्री–पुरुष, अमीर–गरीब, कुरुक्षेत्र की इस पवित्र भूमि पर आकर तीर्थों में स्नान करके प्राचीन मंदिरों, गुरुद्वारों तथा मठों में जाकर पूजा–अर्चना करके धर्म लाभ कमाते हैं। सूर्य–ग्रहण के अवसर पर सभी धर्मों के धार्मिक नेता अपने अपने धर्मों का प्रचार करते हैं। श्रीमद्भागवत् के दसवें अध्याय में वर्णन आया है कि महाभारत का युद्ध प्रारम्भ होने से पहले की बाल है। श्री कृष्ण और यदुवंशी द्वारिका से कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण के अवसर पर आए थे।

यह भी वर्णन आया है कि भगवान श्री कृष्ण सूर्य ग्रहण पर ब्रज की व्याकुल गोपियों से यहाँ के पवित्र तीर्थों पर मिले थे। पुराणों में यह भी उल्लेख आया है कि श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम भी सूर्य ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र के पवित्र तीर्थों के दर्शन करने और ब्रह्मसरावेर, सत्रहीत, सप्त सरोवर, तथा थानेंश्वर महादेव महादेव और अन्य सरोवरों में स्नान करने के लिए पधारे थे।

सातवीं शताब्दी में थानेसर (कुरुक्षेत्र) महाराज हर्ष की राजधानी होने के कारण महाराज हर्ष विभिन्न अवसरों पर यात्रियों का विशेष ध्यान रखते थे। सूर्य ग्रहण के अवसर पर सिक्खों के कई गुरु धर्म प्रचार हेतु यहाँ पर पधारते थे। गुरु नानक देव, गुरु अमरदास, गुरु हरराय, गुरु तेग बहादुर और दशम गुरु गोविन्द सिंह जी की माता गुजरी और धर्म पत्नी सुन्दरी सूर्य ग्रहण के अवसर पर यहाँ पधारे थे। उन्होंने यहाँ के पवित्र सरोवर में स्नान और पूजा पाठ किया तथा जप

व ध्यान किया। श्रद्धालुजन सरोवरों में स्नान, पूजा पाठ और जप करने के पश्चात श्रद्धा के साथ दान देते हैं। पुराणों में उल्लेख मिलता है कि सूर्य ग्रहण के अवसर पर जप, तप, दान और हवन कराने का बहुत फल मिलता है। महाभारत में सूर्य ग्रहण को 'कुल तारण' पर्व कहा गया है।

सूर्य ग्रहण के अवसर पर स्नान करने और दान देने से पिछले कुलों का उद्धार हो जाता है। मत्स्य पुराण के अनुसार सूर्य ग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र में रहना महापुण्यदायी माना गया है। इस अवसर पर कुरुक्षेत्र के तीर्थों में स्नान करने पर हजारों अश्वमेध यज्ञों का फल मिलता है। वायु पुराण के अनुसार कुरुक्षेत्र में सूर्य ग्रहण के अवसर पर दान करने से उत्तरोत्तर तेरह दिन तक तेरह गुणा बढ़ता है। पुराणों में इस बात का भी उल्लेख आया है कि सूर्य ग्रहण और सोमवती अमावस्या के अवसर पर कुरुक्षेत्र के सरोवरों पर सभी देवी–देवताओं का आगमन होता है।

महाभारत के वन पर्व में उल्लेख है कि प्राणी यह कहता है कि मैं कुरुक्षेत्र जाऊँगा और मैं वहाँ निवास करूँगा, वह कुरुक्षेत्र से चाहे हजारों किमी० दूर बैठा हो वह सब पापों से मुक्त हो जाता है। अर्थात् कुरुक्षेत्र का नाम स्मरण करने मात्र से ही उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं।

ब्रह्मसरोवर

सत्रहीत सरोवर

थानेश्वर महादेव

सप्त सरोवर तीर्थ

वेदों के अनुसार

ब्रह्मसरोवर की महिमा

कुरूक्षेत्र के ब्रह्म सरोवर के सम्बन्ध में इतिहास बताता है कि सृष्टि की रचना के समय श्री ब्रह्म जी ने इसी सरोवर परद हवन किया था। तथा सभी देवता पधारे थे। समय के अनुसार यह ब्रह्मसरोवर एक छोटी सी छपड़ी बन गई। महाराजा कुरू को ऋषियों का शराफ था कि आप रात्री को शिला बन जाओगे और सूरज निकलने पर चेतना आयेगी एक समय महाराजा कूरू शिकार के पीछे दोड़े और शिकार छपड़ी में अलोप हो गया। राजा ने बाण मारा जब राजा को शिकार न दिखाई दिया तो उसने अपना तीर छपड़ी के कीचड़ से निकाला। जहाँ–जहाँ राजा के उंगलियों में गारा लगा रात्री को उनमें जान थी। राज पंडितों ने कहा कि राजन उस छपड़ी पर हम सब चलते है सभी वहाँ गए और यह कीचड़ अपने सारे बदन पर लगा लें। राजन ने ऐसा ही किया और राजन को ऋषियों द्वारा दिया हुआ शराफ दूर हो गया। राजा ने लड़के को गद्दी देकर आप इस छपड़ी की खोज़ में निकल गया। खोज़ करने से मालूम हुआ कि यह ब्रह्म सरोवर है।

यह सरोवर तीर्थ यात्रियों का मुख्य आकर्षण केन्द्र है। यह सरोवर 1311 मीटर लम्बा और 640 मी० चौड़ा है। इसी स्थान पर ब्रह्माजी ने अपना पहला यज्ञ किया था। कहा जाता है कि इस सरोवर का निर्माण महाराजा कुरु ने करवाया था। यह सरोवर बहुत ही पवित्र माना जाता है। इसके उत्तरी–पश्चिमी घाट अच्छी हालत में हैं। इस द्वीप समूह पर अनेक मंदिर और ऐतिहासिक महत्व के स्थान हैं। छोटे द्वीपों और श्रवण नाथ मठ को एक पुल से जोड़ा हुआ है। बड़े द्वीप को एक दूसरे सेतु द्वारा जोड़ा गया है। यह सरोवर के उत्तरी किनारे के मध्य से शुरू होकर

सरोवर के मध्य से होता हुआ दक्षिणी किनारे तक जाता है। यह पुल सरोवर को दो भागों में विभाजित करता है। बड़े द्वीप पर कुछ अवशेष मिलते हैं। कुछ का मत है कि ये अवशेष औरंगजेब द्वारा निर्मित एक किले के हैं। औरंगजेब ने हिन्दुओं पर विजय पाकर अतिरिक्त इस सरोवर से पवित्र जल ले जाने वाले तथा सरोवर में स्नान करने वाले तीर्थ यात्रियों से कर लेने के लिए अपने सिपाहियों को नियुक्त कर रखा था।

सरोवर के उत्तरी किनारे पर मठ, धर्मशालाएँ और अनेक मंदिर हैं। सरोवर के उत्तर पूर्वी किनारे पर बाबा कमली वाले की धर्मशाला और उत्तर पश्चिमी किनारे पर बिरला गीता मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उत्तर किनारे के मध्य में व्यास मठ गीता भवन है। इस सरोवर के उत्तर पश्चिमी किनारे पर सिक्खों का पवित्र स्थान है। इसका सम्बन्ध गुरु गोबिन्द सिंह जी से है। वे सूर्य ग्रहण के समय कुरूक्षेत्र में आए थे।

कुरुक्षेत्र की पावन धरा प्राचीन काल से ही अपने तीर्थों के लिए प्रसिद्ध रही है। इस क्षेत्र के अधिकतर तीर्थ ब्रह्मा, विष्णु और महेश इन तीन त्रिदेवों से सम्बन्धित हैं। ब्रह्मा से सम्बन्धित ब्रह्मसरोवर तीर्थ सृष्टि के आदि तीर्थ के नाम से विख्यात रहा है। वामन पुराण में ब्रह्मसरोवर तीर्थ का उल्लेख करते हुए महर्षि लोमहर्षण का कथन है–

''इस तीर्थ की स्थापना ब्रह्मा ने पृथूदक तीर्थ के पास सरस्वती तट पर की थी।''

महर्षि परशुराम के द्वारा अनेक बार पितृतर्पण हेतु यज्ञ किए जाने के कारण इस तीर्थ का नाम समन्तपँचक हुआ। वामन पुराण में पहले इसे ब्रह्मसर तथा बाद में रामह्रद की संज्ञा से व्यवह्रत किया गया।

वामन पुराण में ही अन्यत्र ऐसा भी उल्लेख है कि सृष्टि रचना को ध्यान में रखते हुए ब्रह्माजी ने चारों वर्णों की रचना इसी जगह पर की थी।

कुरुक्षेत्र के इस पवित्रतम तीर्थ का धार्मिक महत्व का वर्णन पुराणों एवं महाभारत में यत्र–तत्र दिखालाई देता है। वामन पुराण में इसके महत्व के बारे में वर्णन किया गया है।

अर्थ चतुर्दशी तथा चैत्र माह की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को इस तीर्थ में स्नान करने तथा उपवास करने वाला व्यक्ति सूक्ष्मातिसूक्ष्म परब्रह्म का दर्शन कर जन्म मरण के बँधन से मुक्त हो जाता है।

ऐसा भी उल्लेख आया है कि सूर्य ग्रहण के अवसर पर यहाँ पर स्नान करने से सहस्र अश्वमेध यज्ञों जितना फल प्राप्त होता है। शायद इसी वजह से सूर्य ग्रहण के मौके पर लाखों श्रद्धालुजन यहाँ स्नान करने आते हैं। इस घाट का निर्माण ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन काल में सन् 1855 में हुआ था। नाम के अनुसार इस घाट के मेहराब के ऊपर एक लम्बे प्लेटफार्म पर दो सिंहों को एक दूसरे के सम्मुख बनाया गया है। इस सरोवर से थोड़ी दूरी पर एक प्राचीन बौद्ध स्तूप पुरातत्व उत्खनन से प्राप्त हुआ है जो सातवीं सदी का माना जाता है। शायद इसी स्तूप के सम्बन्ध में ह्वेन त्सांग ने अपनी पुस्तक सी–यू–की में इसका वर्णन किया है तथा अलेक्जेंडर कनिंछम ने भी इसी स्तूप के बारे अपने विवरण में बताया है।

ब्रह्मसरोवर की विशालता के बारे में अकबर के राजदरबार के लेखकर अबुल फज़ल ने इसकी तुलना एक लघु समुद्र से की है तथा इतिहासकार अलबरूनी ने भी इसी सरोवर की पवित्रता के बारे में अपनी किताब–उल–हिन्द में बताया है।

सन्निहित सरोवर, कुरुक्षेत्र

सन्निहित तीर्थ की गिनती देश के सबसे अधिक प्राचीन और पुण्य प्रदान करने वाले तीर्थों में की जाती है।

इस तीर्थ के धार्मिक महत्व का वर्णन महाभारत और वामन पुराण दोनों में आया है। वामन पुराण में इस तीर्थ के महत्व के बारे में लिखा है कि इसी सरोवर में वह झँडा विद्यमान था, जिससे ब्रह्माजी तथा अन्य सृष्टि पैदा हुई–

वामन पुराण में इसका भी उल्लेख आया है कि ब्रह्मा की नाभि में पवित्र जल का भण्डार था। उसी पवित्र जल से सरोवर पूर्णतया भर गया था।

अर्थ–सूर्य ग्रहण पर इस तीर्थ का स्पर्श मात्र कर लेने से सौ अश्वमेधों के फल की प्राप्ति होती है। महाभारत में इस तीर्थ के महत्व के बारे में विस्तार पूर्वक अन्य जगह पर लिखा है कि इस पृथ्वी पर जितने भी तीर्थ, नदी, सरोवर इत्यादि हैं वे निःसंदेह प्रत्येक माह इस सरोवर में प्रकट होते हैं–

इसी तीर्थ के महत्व के विषय में महाभारत में यह उल्लेख भी आया है कि प्रत्येक महीने ब्रह्मादि देवता एवं तपस्वी ऋषि–मुनि भी यहाँ पर एकत्रित होते हैं। स्त्री अथवा पुरुष के द्वारा किया गये अस्नान तथा दान आदि करने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती हैं।

पद्म पुराण में भी इस तीर्थ के बारे में वर्णन आया है कि सूर्य ग्रहण के मौके पर इस तीर्थ पर किया गया श्राद्ध एवं स्नान का फल सौ अश्वमेध यज्ञ के फल के बराबर माना जाता है।

अर्थ–इस तीर्थ में एक ब्राह्मण को विधिपूर्वक भोजन कराने से कोटिशः ब्राह्माणों को भोजन कराने के बराबर फल मिलता है। स्कन्द पुराण में प्राप्त वर्णन

के अनुसार पाण्डवों ने अज्ञातवास के समय सन्निहित सरोवर के दक्षिणी तट पर शिवलिंग की स्थापना की थी।

इस सरोवर का पुनरुद्धार कुरुक्षेत्र विकास मण्डल द्वारा ही सम्पन्न हुआ था। वर्तमान में इस सरोवर की लम्बाई 1500 फुट और चौड़ाई 550 फुट है। विकास मण्डल के सराहनीय प्रयास से ही तीर्थ यात्रियों के स्नान हेतु लाल पत्थर की सुन्दर सीढ़ियाँ तथा सरोवर के चारों तरफ चबूतरे का निर्माण किया गया है। इसके साथ ही पक्के घाट भी बनाए गए हैं। सन्निहित सरोवर की दक्षिणी दिशा में कमल कुँज विकसित किया गया है।

इसी सरोवर के तट पर ध्रुव नारायण मंदिर के बीच में भगवान चतुर्भुज विष्णु का मंदिर है। पूर्वी भाग में भक्त शिरोमणि हनुमान तथा सिंहवाहिनी दुर्गा का मंदिर है तथा दुख भंजन मंदिर भी है।

इस सरोवर के निकट ही नागर शैली में लक्ष्मी नारायण मंदिर निर्मित किया गया है जो एक रमणीय मंदिर है तथा वास्तुकला की दृष्टि से एक दुर्लभ मंदिर है।

इस तीर्थ में प्रत्येक सोमवती अमावस्या को विशाल मेला लगता है। सूर्य ग्रहण के अवसर पर लाखों की सँख्या में श्रद्धालु भक्तगण इस सरोवर पर स्नान करने के लिए तथा पुण्य प्राप्ति हेतु आते हैं।

इसके आसपास स्थित मंदिरों में प्रातः काल तथा सांयकाल गूंजते शंखों की मधुर ध्वनि और आरती की मधुर आवाज़ मन को आकृष्ट करती है। पूजा में प्रयुक्त सुगँधित सामग्री समस्त वातावरण को सुगन्धमय बना देती है जो प्रत्येक मनुष्य को स्वतः ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है।

स्थानेश्वर सरोवर

स्थानेश्वर महादेव मन्दिर थानेसर शहर में स्थित है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और कुरूक्षेत्र के प्राचीन मंदिरों में से एक है। मंदिर के सामने एक छोटा कुण्ड स्थित है जिसके बारे में पौराणिक सन्दर्भ अनुसार यह माना जाता है कि इसकी कुछ बूँदों से राजा बान का कुष्ठ रोग ठीक हो गया था। भगवान शिव की शिवलिंग के रूप में पहली बार पूजा इसी स्थान पर हुई थी। इसलिए कहा जाता है कि कुरूक्षेत्र की तीर्थ यात्रा इस मंदिर की यात्रा के बिना पूरी नही मानी जाती है। स्थाणु शब्द का अर्थ होता है शिव का निवास। शहर को सम्राट हर्षवर्धन के राज्य काल में राजधानी का गौरव मिला।

मंदिर के भीतर छत पर आज भी प्राचीन कलाकृतियाँ विद्यमान हैं। इस मंदिर में भगवान शिव का शिवलिंग अति प्राचीन शिव लिंग है। यह मंदिर दो भागों में विभाजित है। बाईं ओर भगवान श्री लक्ष्मी नारायण जी का मन्दिर है और दाईं ओर भगवान शिव का मन्दिर है। इस मंदिर में भगवान भैरव, हनुमान और राम परिवार और माता दुर्गा जी की मूर्ति स्थापित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, पांडवों और कौरवों के बीच महाभारत युद्ध आरम्भ होने से पूर्व पांडवों और भगवान श्रीकृष्ण ने इस स्थान पर भगवान शिव की पूजा की तथा महाभारत के युद्ध में विजयी होने का आर्शीवाद प्राप्त किया था।

सप्त सारस्वत तीर्थ

सप्त सारस्वत तीर्थ तक पहुँचने के लिए गाँव की गलियों से होकर जाना पड़ता है। सरस्वती नदी के दक्षिण–पश्चिम तट पर यह तीर्थ स्थित है। सप्त सारस्वत का अर्थ है सात सरस्वतियों का संगम क्योंकि इस स्थान पर सात सरस्वतियों का संगम होता है, इसी कारण इस तीर्थ का नाम सप्त सारस्वत पड़ा। सात सरस्वतियों का संगम होने के कारण वामन पुराण में इस तीर्थ को त्रैलोक्य में दुर्लभ कहा गया है। वामन पुराण में इस तीर्थ के माहात्म्य एवं सरस्वती के सातों नामों का स्पष्ट उल्लेख है।

एक बार ब्रह्माजी द्वारा पुष्कर तीर्थ में यज्ञ का अनुष्ठान किया गया था। सप्त ऋषियों ने उनसे कहा कि आपका यह यज्ञ महान फलदायी नहीं होगा क्योंकि यहाँ नदियों में श्रेष्ठ सरस्वती नदी के दर्शन नहीं हो रहे हैं। ब्रह्माजी के प्रसन्नतापूर्वक स्मरण किए जाने पर 'सुप्रभा' नाम की देवी वहाँ सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुई। पुष्कर तीर्थ में स्थित नदियों में श्रेष्ठ इसी सरस्वती को महात्मा मंकणक कुरुक्षेत्र में लाए। इस तरह ये सप्त सरस्वतियाँ क्रमशः पुष्कर में 'मानसह्रदा', केदरा में सुवेणु, गंगाद्वार में 'विमलोदका' तथा कुरुक्षेत्र में 'सरस्वती' नाम से बहती हैं।

नैमिष तीर्थ में बहुत से ऋषि मुनि एकत्र हुए। वहाँ वेदों का स्वाध्याय तथा वेदों पर चर्चा करते हुए ऋषियों ने सरस्वती नदी का स्मरण किया। ऋषियों द्वारा यज्ञ का आयोजन किए जाने पर उनकी सहायता हेतु सरस्वती वहाँ पर प्रकट हुई तथा वह 'कांचनाक्षी' नाम से विख्यात हुई। तब समस्त ऋषियों ने

सरस्वती की वंदना की।

महाराज गया ने गया क्षेत्र में एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया। वहाँ उपस्थित ऋषियों द्वारा सरस्वती का आह्वान किए जाने पर सरस्वती उपस्थित हुई। उत्तर कौशल में महर्षि उद्दालक ने यज्ञ आयोजन से पूर्व सरस्वती का आह्वान किया। ऋषि मुनियों की सहायतार्थ सरस्वती नदी वहाँ भी प्रकट हुई।

महाराज कुरु ने कुरुक्षेत्र में यज्ञ किया। कुरुक्षेत्र में महर्षि वसिष्ठ के आह्वान पर सरस्वती प्रकट हुई तथा 'ओधवती' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

महाराज दक्ष ने गंगाद्वार पर यज्ञ का आयोजन किया। वहाँ पर सरस्वती नदी शीघ्रगामिनी 'सुरेणु' के नाम से प्रसिद्ध हुई।ब्रह्माजी द्वारा हिमालय पर्वत के पवित्र वन में यज्ञानुष्ठान करने पर सरस्वती नदी का स्मरण करने पर वह 'विमलोदका' नाम से प्रसिद्ध हुई।

यहाँ कोई धार्मिक स्मारक नहीं है एक प्राचीन कुँआ है। इस कुँए को गंगाकूप कहते हैं। जनश्रुति के अनुसार बैसाखी के पर्व पर इस कुँए में एकाएक गंगा नदी के प्रकट होने से इसका जलस्तर बढ़ जाता है और पानी का रँग दूधिया हो जाता है। उस दिन का पानी गंगा जल के समान ही गुणधर्म वाला हो जाता है। श्रद्धालु लोग बैसाखी के दिन इस कुँए के पानी से अत्यन्त धार्मिक भावना के साथ स्नान करते हैं।

ज्योतिसर

बाण गंगा

फल्गू तीर्थ

पेहवा तीर्थ

ज्योतिसर तीर्थ

ज्योतिसर का अर्थ है प्रकाश अर्थात् ज्ञान रूपी प्रकाश का सरोवर। महाभारत का युद्ध इसी स्थान पर हुआ था। लोक कथा के अनुसार ज्योतिसर में भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध प्रारम्भ होने से पहले विषाद तथा मोहग्रस्त अर्जुन को गीता का दिव्य संदेश देकर उसे कर्त्तव्य की ओर प्रेरित किया था। इस समय ज्योतिसर के तट पर अक्षय वट स्थित है। पास में ही श्वेत सँगमरमर से निर्मित पवित्र भूमि पर आदि शंकराचार्य जी ने श्रीमद्भगवद् गीता दर्शन का मनन एवं चिंतन किया था।

सर्वप्रथम 1850 में कश्मीर के महाराज ने यहाँ एक शिव मंदिर बनवाया था। सन् 1924 में अक्षयवट के चारों ओर एक पक्के चबूतरे को बनवाया था। सन् 1967 में कामकोटि पीठ के शंकराचार्य जी के प्रयास से आदि शंकराचार्य के मंदिर और श्रीकृष्ण अर्जुन रथ का निर्माण हुआ।

यहाँ प्रतिवर्ष अब मर्ग माह की शुक्ल पक्ष की एकादशी से 18 दिनों तक गीता जयन्ती समारोह आयोजित होता है। सूर्य ग्रहण के अवसर पर भी यहाँ तीर्थ यात्री अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

इस तीर्थ के जीर्णोद्धार में कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड का बहुत बड़ा हाथ रहा है। इसके जीर्णोद्धार पर बोर्ड ने अब तक 16.5 लाख रुपये प्रदान करके यात्रियों के मनोरंजन के लिए Light & Sound का प्रबन्ध किया है तथा इस तीर्थ के चारों और दीपमाला के लिए बहुत सुन्दर रंगबिरंगी Light लगाकर तथा सुन्दर फबारों से सुन्दरता प्रधान की।

बाण गंगा (गंगा तीर्थ)

कुरुक्षेत्र के अधिकतर तीर्थों का संबंध महाभारत की घटनाओं से रहा है। बाण गंगा नामक यह तीर्थ कुरुक्षेत्र ब्रह्मसरोवर के दक्षिण की ओर 4.8 किमी० की दूरी पर दयालपुरा नामक गाँव में स्थित है।

लोक कथा के अनुसार महाभारत युद्ध के दौरान अभिमन्यु की अन्यायपूर्ण मृत्यु से दुखी होकर अर्जुन ने जयद्रथ को सूर्यास्त से पूर्व मारने की प्रतिज्ञा की थी। दिन भर के परिश्रम से कलान्त रथ के अश्वों को भगवान श्रीकृष्ण के आग्रह पर अर्जुन ने दोपहर के समय कुछ क्षणों का विश्राम इस स्थान पर दिया था। अश्वों की थकान को भगाने व उन्हें नई स्फूर्ति देने के उद्देश्य से अर्जुन ने यहाँ धरती पर बाण मारकर गंगा को प्रकट किया था। श्रीकृष्ण ने गंगा के जल से अश्वों को स्नान कराया था तथा उन्हें शीतल जल पिलाया था। इसी कारण शायद इस तीर्थ पर मिट्टी के बने अश्वों को चढ़ाया जाता है।

इस तीर्थ के पश्चिम में वर्गाकार 99–99 फीट का एक सरोवर है जिसका वर्तमान में जीर्णोद्धार किया गया है। इसी सरोवर के पश्चिम में एक दूसरा कच्चा सरोवर है जिसका पानी पशुओं को पिलाने के काम में लिया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व में यह दोनों सरोवर एक ही रहे होंगे। सरोवर के तल में उत्तर दक्षिण की तरफ ईटों से एक विशाल धनुषाकृति का निर्माण किया गया है जिसकी डोरी लोहे की बनी है।

सरोवर के उत्तरी दिशा में वर्गाकार आधार से उठाई गई लखौरी ईंटों से निर्मित एक समाधि है। तीर्थ परिसर के चारों ओर आम, पीपल, नीम इत्यादि के वृक्ष हैं। दोनों सरोवरों के बीच में गाँव तक पहुँचने के लिए पक्का रास्ता है।

फल्गु तीर्थ

इस तीर्थ की गणना भी कुरुक्षेत्र के प्रसिद्ध तीर्थों में की जाती है। यह तीर्थ कुरुक्षेत्र के ब्रह्मसरोवर से 30 किमी० दूर जींद रोड पर फरल गाँव में स्थापित है। पुराणों एवं महाभारत में फलकीवन इसी जगह पर स्थित था। फलकीवन से ही इसका नाम फरल पड़ा। फलकीवन और फलकी तीर्थ दोनों द्वषवतीं नदी के किनारे पर स्थित थे। कहते हैं कि फलकी वन में पाण्डवों के वंशज अधि सोम कृष्ण ने यहाँ दो वर्ष का निवास किया था। ऋषि मुनियों ने फलकी वन में सहस्रों वर्षों तक तपस्या की थी।

फल्गु तीर्थ में श्राद्धों के महीने में सोमवती अमावस्या के दिन स्नान करने से गयाजी में स्नान करने के समान पुण्य प्राप्त होता है। इस दिन पिण्ड दान करवाने से पितर तृप्त हो जाते हैं। महाभारत एवं पुराणों में बताया गया है कि इस तीर्थ को मन ही मन में स्मरण कर लेने से ही पितर तृप्त हो जाते हैं। कहते हैं कि मिश्रक तीर्थ भी यहीं पर था। मुनि व्यास ने देवताओं के लिए सभी तीर्थों के पुण्य फल को यहाँ पर एकत्रित किया था।

उतरी भारत के सभी राज्यों से सनातनधर्म को मानने वाले श्राद्धों के महीनें में अपने पितरों को श्रद्धाजली देने हित इस तीर्थ पर स्नान करने लिए बड़ी संख्या में प्रधारते हैं।

पेहवा तीर्थ

यह तीर्थ कुरुक्षेत्र में उससे 27 किमी० दूर पश्चिम दिशा में है। यह तीर्थ कुरुक्षेत्र के सब तीर्थों में सबसे अधिक महत्व रखता है। पेहवा पृथूदक तीर्थ, सरस्वती पुण्यफल देने वाला माना गया है। कहते हैं कि इस तीर्थ की रचना स्वयं ब्रह्मजी ने पृथ्वी, जल, वायु एवं आकाश के सहयोग से सृष्टि के आदिकाल में की थी। वामन पुराण अनुसार पृथूदक तीर्थ में स्वयं भगवान शिव ने स्नान किया। इस घटना से पता चलता है कि पृथूदक तीर्थ का महत्व गंगाद्वार से अधिक था। राजा वेन के पुत्र पृथु के नाम पर इस तीर्थ का नाम पृथूदक पड़ा।

महाराजा वेन कोढ़ से पीड़ित थे। उन्होंने यहाँ पर स्नान किया और उनका कोढ़ ठीक हो गया। जिस जगह पर महाराजा वेन का कोढ़ ठीक हुआ था। उस स्थान पर सरस्वती नदी के किनारे पर राजा पृथु ने अपने पिता के स्वर्गवास होने पर उनका क्रियाकर्म तथा श्राद्ध किया था। तभी सभी प्राणियों को जल प्रदान किया था।

पृथूदक तीर्थ की पवित्रता एवं महत्व का वर्णन पुराणों में अनेक जगहों पर किया गया है। पृथूदक तीर्थ को पापहारी, कल्याणकारी, बहुपुण्य युक्त तथा सब तीर्थों में उत्तम माना गया है। महाभारत में वर्णित है कि जो मनुष्य सरस्वती के उत्तरी तट पर जप करता हुआ मृत्यु को प्राप्त होता है वह स्वर्ग को प्राप्त करता है।

चैत्र मास की कृष्ण चतुर्दशी के दिन यहाँ पर बहुत बड़ा मेला लगता है। मनुष्य मृतकों की मुक्ति के उद्देश्य से भी यहाँ पर आते हैं इस तीर्थ में स्नान करने से लोगों के द्वारा जाने अनजाने में किए गए पापों से छुटकारा मिल जाता है। कहतें हैं कि इस तीर्थ में स्नान करने से सात अश्वमेध यज्ञों का फल मिलता है।

भद्रकाली मन्दिर

बिरला मन्दिर

वेंकटेश्वर (बाला जी मन्दिर)

इस्कॉन मन्दिर

श्री कृष्ण संग्राहलय

कुरूक्षेत्र चित्रमाला तथा विज्ञान केन्द्र

कलपना चावला सौरमंडल

जयराम विद्या पीठ आश्रम

भद्रकाली मंदिर

ऐतिहासिक मान्यता के अनुसार यह सिद्ध पीठ सम्पूर्ण भारतवर्ष की 51 पीठों में से एक है। पौराणिक कथा के अनुसार दक्ष के यज्ञ में उसकी पुत्री सती ने अपने पति शंकर भगवान का भाग ने देखकर तथा अपने पिता द्वारा अपने पति की निन्दा करते सुनकर इतनी दुखी एवं क्रोधित हुई कि उसने यज्ञ कुण्ड में ही अपनी देह का त्याग कर दिया।

जब भगवान शंकर को सती के देह त्याग का समाचार मिला तो उन्होंने वहाँ आकर सती के मृत देह को अपने कँधे पर धारण कर उन्मत्त भाव से नृत्य करते हुए तीनों लोकों में विचरण करने लगे। भगवान शिव की ऐसी दशा को देखकर भगवान विष्णु ने अपने चक्र से सती के शरीर को छोटे–छोटे टुकड़ों में विभजित कर दिया। सती की देह 51 टुकड़ों में विभिक्त हो गयी। जिन जिन जगहों पर ये देहावशेष गिरे, उन्हीं जगहों पर शक्ति पीठों की स्थापना की गई। कुरुक्षेत्र में स्थित इस तीर्थ में सती की देह के दाहिने पाँव की एड़ी गिरी थी, वहाँ सावित्री देवी एवं स्थाणु भैरव प्रकट हुए। यह तीर्थ वही महान शक्ति पीठ है।

लोक प्रचलित कथा के अनुसार यह वही स्थान है, जहाँ महाभारत युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध में स्वयं की विजय तथा शत्रुओं की पराजय हेतु शाँत एवं पवित्र चित से श्री दुर्गा स्रोत का पाठ करने को कहा था। श्रीकृष्ण के कहने पर अर्जुन ने अँजलिबद्ध होकर माँ भगवती की स्तुति की और माँ भगवती ने प्रसन्न होकर अर्जुन को अजेय होने का वरदान दिया।

भद्रकाली दुर्गाजी का ही एक नाम है। महाभारत के भीष्म पुराण में यह वर्णन है कि अर्जुन ने इसी नाम से वरदायिनी दुर्गा जी की स्तुति की थी।

इस तीर्थ पर दशहरे के अवसर पर एक विशाल मेले का आयोजन किया

जाता है।

नवरात्रों के अवसर पर भी इस तीर्थ पर श्रद्धालाओं की अपार भीड़ उमड़ पड़ती है।

हरियाणा की यह अति प्राचीन सिद्ध पीठ थानेसर शहर की ढाँसा रोड़ पर चुँगी के पास स्थित है। यह 51 शक्ति पीठों में से एक है तथा इससे संबंधित शिवपीठ का नाम स्थानेश्वर है।

जनसाधारण में इस तीर्थ के प्रति अत्यन्त श्रद्धा देखने को मिलती है। प्रचलित मान्यता व विश्वास के अनुसार जो व्यक्ति देवी कूप पर जाकर माँ भगवती के सामने कोई कामना करता है तो उसकी वह कामना माँ की कृपा से अवश्य पूरी हो जाती है। मनोकामना के पूर्ण होने पर भक्तजनों के द्वारा यहाँ पर मिट्टी के अश्व चढ़ाए जाते हैं।

श्रीमद्भागवत् पुराण के अनुसार बचपन में भगवान श्रीकृष्ण का मुण्डन संस्कार भी इसी मंदिर में हुआ था।

बिरला मन्दिर

बिरला मंदिर, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि इस मंदिर को बिरला साम्राज्य के कर्ता–धर्ता स्वर्गिय जुगल बिरला द्वारा 1952 शहर के पुराने हिस्से में बनाया गया है। बिरला मंदिर के बनने के बाद, यहाँ पुराने मंदिरों का उद्धार करवाया गया है और पर्यटकों के लिए नए पर्यटन स्थल बने गए, लंबे समय से यह मंदिर कुरूक्षेत्र के प्रमुख आकर्षणों में से एक है। मन्दिर से लगभग ढाई किमी. की दूरी रेलवे स्टेशन और पास में ही ब्रह्म कुंड भी स्थित है। बिरला मंदिर, पूरी तरीके से संगमरमर का बना हुआ है और इसके पीछे के हिस्से में काफी

हरियाली है। मंदिर के मुख्य परिसर में भगवान श्री कृष्ण के सात घोड़ों के रथ पर सारथी बने चित्र को दर्शाया गया है, यह वही स्थान है जहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने गीता सार दिया था और अर्जुन का मोह भंग करते हुए उन्हें सत्य की लड़ाई लड़ने का बल दिया था। इस चित्र में अर्जुन, भगवान श्री कृष्ण के सामने हाथ जोड़े खड़े हुए है। यह मंदिर, थानेसर में उसी स्थान पर स्थित है जहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश दिया था। इस मंदिर में कई संतों, देवी–देवताओं, भगवान श्रीकृष्ण, हनुमान जी, श्रीराम आदि की मूर्तियां भी लगी हुई है। गुरूनानक, गुरू गोबिंद साहिब, गरू तेग बहादुर, संत रविदास, इन सभी की शिक्षायों और उपदेश दीवारों पर अंक्ति किए गये।

श्री वेंकटेश्वर (बाला जी) मन्दिर

दक्षिण भारत की विश्व प्रसिद्ध तीरू माला तीरूपति देव स्थान संस्था जिस के द्वारा दक्षिणी भारत में प्रसिद्ध तीरूपति पहाडियों पर विश्व का प्रसिद्ध भगवान श्री कृष्ण (वेंकटेश्वर) जी का मन्दिर जो श्री बाला जी के नाम से भी जाना जाता है वह सथित है। तीरूपति देव स्थान संस्था द्वारा कुरूक्षेत्र में ब्रह्म सरोवर के पूर्व कोणे पर भगवान वेंकटेश्वर (बाला जी) का मन्दिर बनवाने के लिए भारत सरकार से की गई प्राधना स्वीकार करते हुए कुरूक्षेत्र विकास बोर्ड द्वारा अनूदान में दी गई 5.52 ऐकड़ दी गई भूमि पर अनूमानित 30 करोड़ रूपये की लागत से इस भव्य मन्दिर का निर्माण वर्ष 2012 में किया गया।

इस्कॉन मन्दिर

अन्तराष्ट्रीय भगवान श्री कृष्ण के उर्दश्यों तथा संस्कृति प्रचार संस्था जिस का कठन 1966 में न्यूयॉर्क नगर में भक्ति देवान्त स्वामी प्रभुयात ने अरम्भ किया इस संस्था ने देश–विदेश में अनेक मन्दिर और विद्यालय भगवान श्री कृष्ण के उपदेश तथा भक्ति के प्रचार के लिये स्थापत किये। इस संस्था द्वारा भारत के सभी मुख्य शहरों में भगवान श्री कृष्ण के मन्दिर का करोड़ो रूपये की लागत से निर्माण किया। इस संस्था द्वारा कुरूक्षेत्र में जो भगवान श्री कृष्ण की कर्म भूमि एवंम विश्व प्रसिद्ध श्रीमद्भगवत् गीता के उपदेश का स्थान होने के कारण इस संस्था द्वारा कुरूक्षेत्र ज्योतिसर तीर्थ में भगवान श्री कृष्ण का भव्य मन्दिर तथा संस्कृति कंद्र के निर्माण के उपदेश से कुरूक्षेत्र विकास बोर्ड 6 एकड़ भूमि ली गई जिस पर करोड़ों रूपये की लागत से भगवान श्री कृष्ण संस्कृति भवन का निर्माण किया जा रहा है।

श्री कृष्ण संग्राहलय

यह संग्रहालय भगवान श्री कृष्ण को समर्पित है जिसे कुरूक्षेत्र विकास प्राधिकरण के द्वारा 1987 में बनावाया गया था। इसका भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरमन के द्वारा उद्घाटन किया गया था। इसे बाद में मौजूदा इमारत में स्थानांतरित कर दिया गया था। इस स्थान पर दो अन्य स्थान भी है जिन्हें मल्टीमीडिया महाभारत और गीता गैलरी के नाम से जाना

जाता है और इसकी स्थापना 2012 में तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल के द्वारा की गई थी। इस संग्रहालय में भगवान श्री कृष्ण के बारे में समस्त जानकारियां प्रदान की जाती है। उनके सभी स्वरूपों, अवतारों, कार्ये, आदि के बारे में बताया जाता है। भगवान श्रीकृष्ण को एक दार्शनिक, सच्चे धार्मिक नेता और प्रेमी के रूप में भी कलाकृतियों, मूर्तियों, चित्रों, शिलालेखों आदि के द्वारा दर्शाया गया है।

कुरूक्षेत्र पैनोरमा एंड साइंस सेंटर

कुरूक्षेत्र पैनोरमा और विज्ञान केंद्र में दो अलग–अलग प्रकार के प्रदर्शन हैं। केंद्र में कुछ वैज्ञानिक वस्तुओं को भी प्रदर्शित किया जाता है। भूमि तल में, भारत–विज्ञान, प्रौद्योगिकी और संस्कृति में भारत–ए–विरासत नामक एक प्रदर्शनी, जिसमें पदार्थों के गुणों, परमाणु की संरचना, ज्यामिति, अंकगणितीय नियम, खगोल विज्ञान, दवा और सर्जरी की प्राचीन भारतीय अवधारणा पर काम करने और संवादात्मक प्रदर्शन शामिल हैं। इसकी सुरुचिपूर्ण वास्तुकला और वातावरण के साथ, केंद्र का मुख्य आकर्षण कुरूक्षेत्र की महाकाव्य लड़ाई का एक जीवन–जैसा पैनोरमा है। पांडवों और कौरवों के बीच युद्ध के मैदान का डायरामा है जो वास्तविक रूप से नरसंहार का प्रतीक है। यह ईमारत विज्ञान पार्क में स्थापित है।

कल्पना चावला तारामंडल

हरियाणा स्टेट काउंसिल फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी, द्वारा ज्योतिसर तीर्थ के पास में कल्पना चावला मेमोरियल प्लेनेटरीयम राष्ट्रीय संग्रहालय विज्ञान संग्रहालय, संस्कृति मंत्रालय, सरकार के साथ संयुक्त सहयोग में स्थापित किया गया है।

भारत देश के हरियाणा राज्य की बहादूर तथा होनहार बेटी जो पहली महिला के रूप में अंतरिक्ष यात्री डॉ कल्पना चावला की याद में सरकार द्वारा 6.50 करोड़ की लागत से बने तारामंडल में 5 एकड़ भूमि का क्षेत्र शामिल है। पार्क से घिरा हुआ तारामंडल नवीनतम प्रौद्योगिकी उपकरणों का उपयोग करके खगोल विज्ञान शो का मिश्रण प्रदान करता है। तारामंडल शहर के अद्वितीय और सबसे पसंदीदा पर्यटन स्थल में से एक के रूप में उभरा है।

उसके अंदर रखे उत्कृष्ट कार्यक्रम छात्रों की अंतरिक्ष के बारे में जानकारी की पूरी श्रृंखला के साथ अपनी जिज्ञासा को पूरा करते हैं। खगोल विज्ञान शो आम तौर पर हिंदी भाषा में चलाए जाते हैं।

जयराम विद्यापीठ

जयराम विद्यापीठ में हरवर्ष गीता जयंती के कार्यक्रमों से विधिवत मंत्रोच्चारण के साथ हनुमत ध्वजारोहण किया जाता है। जयराम विद्यापीठ द्वारा श्रीकृष्ण जन्म उत्सव, श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन, सामूहिक विवाह समारोह, सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं, हास्य कवि सम्मेलन, भव्य शोभा यात्र निकाली जाती हैं।

विभन्न स्कूलों के लगभग 4000 विद्यार्थी अपनी प्रतिभा से सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं, गीतें आदि से विद्यार्थियों को गीता के प्रति जागरूकता करवाया जाता है।

आरती जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे।।ॐ
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनसे मन का।
सुख संपत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।।ॐ
मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी।।ॐ
तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।।ॐ
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता।।ॐ
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमती।।ॐ
दीनबंधु दुखहर्ता, तुम रक्षक मेरे।
करुणा हस्त बढ़ाओ, द्वार पड़ा तेरे।।ॐ
विषम विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा।।ॐ
श्री जगदीश जी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख संपत्ति पावे।।ॐ

1.	Kedarnath	in Rudraprayag, Uttarakhand
2.	Vishwanath	in Varanasi, Uttar Pradesh
3.	Mahakaleswar	in Ujjain, Madhya Pradesh
4.	Nageshvara	in Dwarka, Gujarat
5.	Omkareshwar	in Khandwa, Madhya Pradesh
6.	Baidyanath	in Deoghar, Jharkhand
7.	Somnath	in Gir Somnath, Gujarat
8.	Grishneshwar	in Aurangabad, Maharashtra
9.	Trimbakeshwar	in Nashik, Maharashtra
10.	Bhimashankar	in Maharashtra
11.	Mallikarjuna	in Srisailam, Andhra Pradesh
12.	Ramanathaswamy	in Rameshwaram, Tamil Nadu

J.K. Gupta 98552-48482

S. Gupta 97812-48482

Gupta & Gupta

SANITARY HOUSE

Deal in : General Order Suppliers Exclusive

HINDU PUBLIC SCHOOL ROAD, TRIPURI, PATIALA-147 004 0175-2353682 (S)

Aggarwal

Health Care and Eye Hospital

Dr. Rohit Aggarwal
M.D (Medicine), D.M (Endocrinology)
Spl. Diabetes, Thyroid & Reproductive medicine

Dr. Nidhi Aggarwal
M.S (Eye), Fellow Aravind Hospital Madurai
Spl. Laser Therapy in Diabetic Retinopathy

Centre of Excellence for Diabetes, Thyroid, Hormonal disorders and Eye care

Facilities Available

- Diabetes
- Thyroid
- Obesity
- Impotency
- Infertility
- Short Stature
- Delayed Growth
- Menstrual Abnormalities
- Hirsutism
- Bone Disease
- Cataract Surgery Phacoemulsification with Legion Machine (First in Punjab)
- Femto Blade Free Lasik
- Phakic IOL/ ICL
- Cornea Clinic
- Retina Clinic
- Squint E Surgery
- Glaucoma
- YAG Capsulotomy
- Optical & Contact Lens Services

Grid Road , Sarabha Nagar, Bhadson Road, Patiala. | M: 9914629520, 0175-2350000

Naveen Lehngas

Qila Chowk, Bazazan Bazar, Patiala-147001

M: 98150-21282, 98729-81011, 99885-31770

Web: wwwnaveenlehngas.com | Email: naveenlehngas@gmail.com

fb.me/naveenlehngas.pta www.instagram.com/naveenlehngas/